भारत – दक्षिण अफ्रीका संबंध

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :

दक्षिण अफ्रीका में आजादी एवं न्याय के लिए संघर्ष के साथ भारत के संबंध उस अवधि से चले आ रहे हैं जब महात्मा गांधी जी ने एक शताब्दी पहले दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह आंदोलन शुरू किया था। दक्षिण अफ्रीका के रंगभेद के विरूद्ध आंदोलन का समर्थन करने वाले अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में भारत सबसे आगे था; यह पहला देश था जिसने रंगभेदी सरकार से 1946 में व्यापार संबंध तोड़ लिया था तथा इसके बाद दक्षिण अफ्रीका पर एक पूर्ण – राजनयिक, वाणिज्यिक, सांस्कृतिक एवं खेल – प्रतिबंध लगाया था। भारत ने संयुक्त राष्ट्र, गुट निरपेक्ष आंदोलन तथा अन्य बहुपक्षीय संगठनों के एजेंडा में रंगभेद को शामिल करने तथा दक्षिण अफ्रीका के विरूद्ध व्यापक अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबंध लगाने के लिए निरंतर कार्य किया। 1960 के दशक से ही ए एन सी का नई दिल्ली में प्रतिनिधि कार्यालय कार्य कर रहा है। भारत ने अग्रणी देशों के समर्थन के माध्यम से संघर्ष को जारी रखने में मदद के लिए अफ्रीका फंड के लिए सक्रियता से कार्य किया।

तत्कालीन अफ्रीकी सरकार तथा ए एन सी के बीच बातचीत के बाद दक्षिण अफ्रीका के साथ भारत के संबंध मई, 1993 में जोहांसबर्ग में एक सांस्कृतिक केंद्र के उद्घाटन के साथ लगभग चार दशक के बाद दक्षिण अफ्रीका के साथ भारत के संबंध बहाल हुए। दक्षिण अफ्रीका के साथ औपचारिक राजनयिक एवं कासुंलर संबंध दक्षिण अफ्रीका के तत्कालीन विदेश मंत्री श्री पिक बोथा की भारत यात्रा के दौरान नवंबर, 1993 में बहाल हुए। मई, 1994 में प्रिटोरिया में भारतीय उच्चायोग खोला गया तथा इसके बाद उसी महीने में डरबन में कांसुलेट जनरल खोला गया। मई, 1994 में प्रिटोरिया में भारतीय उच्चायोग खोला गया तथा इसके बाद उसी महीने में डरबन में कांसुलेट जनरल खोला गया। चूंकि दक्षिण अफ्रीका में संसद की बैठक केपटाउन में होती है, इसलिए उच्चायोग का एक स्थाई कार्यालय वहां 1996 में खोला गया, जिसका नाम जनवरी, 2011 से भारतीय कांसुलेट जनरल के रूप में रखा गया। दिल्ली में उच्चायोग के अलावा दक्षिण अफ्रीका का मुंबई एक कांसुलेट जनरल है।

राजनीतिक संबंध

1994 से राजनीतिक संबंधों का विकास रंगभेद के खिलाफ संघर्ष के लिए भारत के निरंतर समर्थन की पृष्ठभूमि में, द्विपक्षीय रूप से तथा ब्रिक्स, इब्सा तथा अन्य मंचों के माध्यम से भी दक्षिण अफ्रीका के साथ हमारे घनिष्ठ एवं मधुर संबंध निरंतर सुदृढ़ हो रहे हैं। 1993 में राजनयिक संबंध बहाल होने के बाद से आर्थिक एवं वाणिज्यिक सहयोग, रक्षा, संस्कृति, स्वास्थ्य, मानव बस्ती, लोक प्रशासन, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा शिक्षा जैसे विविध क्षेत्र में दोनों देशों के बीच अनेक द्विपक्षीय करारों पर हस्ताक्षर किए गए हैं। भारत का तकनीकी और आर्थिक सहयोग कार्यक्रम (आई टी ई सी) मानव संसाधन के विकास में सहयोग को बढ़ावा देने का एक उपयोगी माध्यम रहा है।

उच्च स्तर पर हाल की बैठकें :

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने जुलाई, 2014 में ब्राजील के फोर्टालेजा शहर में ब्रिक्स शिखर बैठक के दौरान अतिरिक्त समय में, नवंबर 2014 में ब्रिसबेन, आस्ट्रेलिया में जी-20 शिखर बैठक के दौरान अतिरिक्त समय में, 9 जुलाई 2015 को ऊफा, रूस में 7वीं ब्रिक्स शिखर बैठक के दौरान अतिरिक्त समय में और 28 अक्टूबर 2015 को तीसरी भारत - दक्षिण अफ्रीका मंच शिखर बैठक के दौरान अतिरिक्त समय में दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति श्री जैकब जुमा से मुलाकात की।

राष्ट्रपति जैकब जुमा के नेतृत्व में तीसरी भारत - दक्षिण अफ्रीका मंच शिखर बैठक में दक्षिण अफ्रीका के शिष्टमंडल ने भाग लिया तथा उनके साथ विदेश मंत्री मैटी नकोयाना मशाबने भी भारत दौरे पर आई थी। शिखर बैठक के दौरान अतिरिक्त समय में राष्ट्रपति जैकब जुमा ने 28 अक्टूबर 2015 को भारत के माननीय प्रधानमंत्री के साथ द्विपक्षीय बैठक की थी।

5 दिसंबर, 2013 को डा. नेलसन मंडेला का निधन हो जाने पर भारत के राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी के नेतृत्व में एक बहुदलीय शिष्टमंडल ने 10 दिसंबर, 2013 को जोहांसबर्ग का दौरा किया था, जिसमें यू पी ए अध्यक्ष एवं कांग्रेस पार्टी अध्यक्ष, पूर्व वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री, लोक सभा में प्रतिपक्ष की पूर्व नेता श्रीमती सुषमा स्वराज, सी पी आई (एम) एवं बी एस पी के तत्कालीन संसद सदस्य तथा भारत सरकार के अन्य वरिष्ठ अधिकारी शामिल थे।

पूर्व प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह ने डरबन में ब्रिक्स की 5वीं शिखर बैठक में भाग लेने के लिए मार्च, 2013 में दक्षिण अफ्रीका का दौरा किया। आधिकारिक शिष्टमंडल में तत्कालीन वित्त मंत्री श्री पी चिदंबरम, तत्कालीन वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री श्री आनंद शर्मा तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी शामिल थे। तत्कालीन संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री श्री सचिन पायलट और एक व्यापार शिष्टमंडल के साथ तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल ने मई, 2012 में दक्षिण अफ्रीका का राजकीय दौरा किया। इस शिष्टमंडल ने प्रिटोरिया, केपटाउन और डरबन का दौरान किया।

दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति श्री जैकब जुमा ने ब्रिक्स की चौथी शिखर बैठक के लिए मार्च, 2012 में भारत का दौरा किया। इससे पहले श्रीमती नोम्पुमेलेलो नतुली जुमा के साथ राष्ट्रपति जुमा ने जून, 2010 में भारत का राजकीय दौरा किया था। राष्ट्रपति जुमा के शिष्टमंडल ने सात केबिनेट मंत्री (अंतर्राष्ट्रीय संबंध एवं सहयोग मंत्री, रक्षा मंत्री लोक उद्यम मंत्री, व्यापार एवं उद्योग मंत्री, कृषि, वानिकी एवं मछली पालन मंत्री, परिवहन एवं संचार मंत्री शामिल थे। इस यात्रा के दौरान तीन करारों / एम ओ यू पर हस्ताक्षर किया गए : (i) कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों में सहयोग के लिए एम ओ यू; (ii) हवाई सेवा करार; और (iii) भारत के विदेश सेवा संस्थान और दक्षिण अफ्रीका की राजनयिक अकादमी के बीच सहयोग के लिए एम ओ यू। राष्ट्रपति जुमा के साथ भारत यात्रा पर 200 सदस्यीय एक कारोबारी शिष्टमंडल के अलावा वरिष्ठ अधिकारी भी आए थे। राष्ट्रपति जुमा ने तत्कालीन राष्ट्रपति, उप राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री से मुलाकात की; तत्कालीन विदेश राज्य मंत्री, यू पी ए अध्यक्ष एवं लोक सभा में प्रतिपक्ष की नेता ने उनसे मुलाकात की। चर्चा में भाई-चारे की गर्माहट एवं लगाव तथा

सामरिक साझेदारी प्रतिबिंबित हुई जो हमारे द्विपक्षीय संबंध की खासियत है। राष्ट्रपति जुमा तथा उनके शिष्टमंडल ने जून, 2010 में मुंबई में कारोबारी नेताओं से भी मुलाकात की।

भारत और दक्षिण अफ्रीका के बीच नियमित संसदीय आदान – प्रदान जारी रहा। दक्षिण अफ्रीका की ओर से स्पीकर श्री मैक्स सिसुलु तथा राष्ट्रपति प्रांतीय परिषद के अध्यक्ष श्री एम जे महलंगू के नेतृत्व में एक संयुक्त संसदीय शिष्टमंडल ने जुलाई, 2012 में भारत का दौरा किया। तत्कालीन संसदीय कार्य एवं जल संसाधन मंत्री श्री पवन कुमार बंसल के नेतृत्व में एक सद्भावना संसदीय शिष्टमंडल ने अक्टूबर 2012 में दक्षिण अफ्रीका का दौरा किया।

मंत्री स्तर पर नियमित रूप से आदान – प्रदान होता रहा है जिसमें से कुछ यात्राएं इस प्रकार हैं : तत्कालीन कोयला राज्य मंत्री श्री प्रतीक प्रकाश बापू पाटिल की अक्टूबर, 2012 में दक्षिण अफ्रीका की यात्रा तथा पूर्व वाणिज्य, उद्योग एवं कपड़ा मंत्री श्री आनंद शर्मा की जनवरी, 2013 में दक्षिण अफ्रीका की यात्रा। तत्कालीन कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण मंत्री श्री शरद पवार ने 28-29 अक्टूबर, 2013 को ब्रिक्स के कृषि एवं कृषि विकास मंत्रियों की तीसरी बैठक में भाग लेने के लिए दक्षिण अफ्रीका का दौरा किया। पूर्व स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री गुलाम नवी आजाद ने नवंबर, 2013 में कंपटाउन में आयोजित ब्रिक्स स्वास्थ्य मंत्री बैठक में भाग लिया। पूर्व राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार श्री शिवशंकर मेनन ने दिसंबर, 2013 में केपटाउन में आयोजित ब्रिक्स एन एस ए बैठक में भाग लिया। जम्मू एवं कश्मीर के पूर्व वित्त एवं लद्दाख मामले मंत्री श्री ए आर राठर के नेतृत्व में राज्यों के वित्त मंत्रियों की 28 सदस्यीय अधिकार प्राप्त समिति ने जुलाई – अगस्त 2013 में दक्षिण अफ्रीका का दौरा किया। आई एन सी के नेता श्री आनंद शर्मा ने 23 मई, 2014 को आई एन सी की ओर से राष्ट्रपति के शपथ – ग्रहण समारोह में भाग लिया। मध्य प्रदेश की वैश्विक निवेशक शिखर बैठक, 2014 का प्रचार - प्रसार करने के लिए मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने एक उच्च स्तरीय शिष्टमंडल के साथ 7 से 14 जून 2014 के दौरान दक्षिण अफ्रीका का दौरा किया। माननीय सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्री श्री कलराज मिश्र ने 17 से 21 जनवरी 2015 के दौरान दक्षिण अफ्रीका का दौरा किया। अपनी यात्रा के दौरान उन्होंने अश्वेत व्यवसाय परिषद, दक्षिण अफ्रीका द्वारा आयोजित "लघु व्यवसाय विकास पर भारतीय मॉडल'' पर सेमिनार में भाग लिया तथा 19 जनवरी, 2015 को एन एस आई सी और अश्वेत व्यवसाय परिषद के बीच एम ओ यू पर हस्ताक्षर के साक्षी बने। उन्होंने केपटाउन में पश्चिमी केप के प्रधानमंत्री, आर्थिक विकास मंत्री तथा वित्त मंत्री से भी मुलाकात की।

प्रवासी भारतीय दिवस 2015 में भाग लेने के लिए दक्षिण अफ्रीका की अंतर्राष्ट्रीय संबंध एवं सहयोग मंत्री सुश्री मैटी नकोना मशाबेन ने 7 से 9 जनवरी, 2015 के दौरान अतिरिक्त समय में, उन्होंने माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की तथा माननीय विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज के साथ बैठक की। दक्षिण अफ्रीका के गृह मंत्री श्री मालुसी गिगाबा ने 5 से 9 जुलाई 2015 के दौरान भारत का दौरा किया। अपनी यात्रा के दौरान उन्होंने माननीय गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह से मुलाकात की।

संयुकत आयोग एवं विदेश कार्यालय परामर्श

परस्पर लाभप्रद सहयोग के क्षेत्रों की पहचान करने के लिए 1994 में विदेश मंत्रियों के स्तर पर भारत – दक्षिण अफ्रीका संयुक्त आयोग का गठन किया गया। फरवरी, 2008 में प्रिटोरिया में जे एम सी की 7वीं बैठक हुई। यात्रा के दौरान सीमा शुल्क सहयोग, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा राजनयिक एवं आधिकारिक पासपोर्ट धारकों के लिए वीजा मुक्त यात्रा पर तीन करारों पर हस्ताक्षर किए गए। मार्च, 2011 में नई दिल्ली में जे एम सी की 8वीं बैठक हुई। तत्कालीन विदेश मंत्री श्री एस एम कृष्णा द्वारा भारतीय शिष्टमंडल की अध्यक्षता की गई, जबकि विदेश मंत्री सुश्री मशाबेन ने दक्षिण अफ्रीका के शिष्टमंडल का नेतृत्व किया। भारत - दक्षिण अफ्रीका संयुक्त मंत्री स्तरीय आयोग की 9वीं बैठक 19 मई 2015 को डरबन में हुई। इसकी सह अध्यक्षता माननीय विदेश एवं प्रवासी भारतीय कार्य मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज और दक्षिण अफ्रीका की अंतर्राष्ट्रीय संबंध एवं सहयोग मंत्री सुश्री मैटी नकोआना मशाबेन द्वारा की गई। यात्रा के दौरान, विदेश मंत्री ने राष्ट्रपति जैकब जुमा से शिष्टाचार मुलाकात की।

भारत - दक्षिण अफ्रीका विदेश कार्यालय परामर्श की 7वीं बैठक जनवरी 2015 में नई दिल्ली में हुई। इसकी सह अध्यक्षता भारत की ओर से तत्कालीन संयुक्त सचिव (ई एंड एस ए) श्री विनय कुमार और दक्षिण अफ्रीका की ओर से राजदूत (डा.) अनिल सुकलाल, उप महानिदेशक, एशिया एवं मध्य पूर्व, अंतर्राष्ट्रीय संबंध एवं सहयोग विभाग द्वारा की गई।

इब्सा एवं ब्रिक्स पहल

6 जून, 2003 को भारत, ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका के विदेश मंत्रियों की बैठक ब्रासीलिया में हुई तथा वे नियमित परामर्श के लिए एक वार्ता मंच का गठन करने के लिए सहमत हुए। इसके बाद 2006 में इसे शिखर बैठक के स्तर पर स्तरोन्नत किया गया; अब तक पांच शिखर बैठकों का आयोजन हो चुका है तथा पिछली बैठक अक्टूबर, 2011 में प्रिटोरिया में हुई थी। इब्सा त्रिपक्षीय मंत्री स्तरीय बैठक मार्च, 2011 में नई दिल्ली में हुई थी। स्वास्थ्य, कृषि, शिक्षा, मानव बस्ती, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी एंव रक्षा जैसे क्षेत्रों में 16 सेक्टोरल कार्य समूह गठित किए गए हैं। इब्सा की अगली शिखर बैठक 2015 के मध्य में भारत में होने की संभावना है।

दक्षिण अफ्रीका को भी ब्रिक्स समूह के सदस्य के रूप में शामिल किया गया तथा इसने अप्रैल, 2011 में सान्या में आयोजित ब्रिक्स शिखर बैठक, मार्च, 2012 में नई दिलली में आयोजित ब्रिक्स शिखर बैठक में भाग लिया तथा दक्षिण अफ्रीका ने मार्च, 2013 में डरबन में 5वीं शिखर बैठक की मेजबानी की। इसके बाद, जुलाई, 2014 में फोर्टालेजा, ब्राजील में ब्रिक्स शिखर बैठक हुई तथा ब्रिक्स की 7वीं शिखर बैठक जुलाई, 2015 में रूस के उफा शहर में हुई।

वाणिज्यिक एवं आर्थिक संबंध :

वर्ष 1993 में राजनयिक संबंध स्थापित होने के बाद से वाणिज्यिक संबंध सुदृढ़ हुए हैं। राष्ट्रपति जुमा की भारत यात्रा के दौरान दोनों पक्ष वर्ष 2012 तक द्विपक्षीय व्यापार में 10 बिलियन अमरीकी डालर के लक्ष्य के लिए काम करने पर सहमत हुए। तत्कालीन वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री की जनवरी, 2011 में दक्षिण अफ्रीका की यात्रा के दौरान व्यापार लक्ष्य को बढ़ाकर 2014 तक 15 बिलियन अमरीकी डालर कर दिया गया क्योंकि द्विपक्षीय व्यापार के पिछले लक्ष्य को वित्त वर्ष 2011-12 में ही प्राप्त कर लिया गया था। वर्ष 2012-13 और 2013-14 में दक्षिण अफ्रीका से भारत के आयात में मुख्य रूप से भारत सरकार द्वारा सोने के आयात पर प्रतिबंध की वजह से गिरावट आई औरा इसलिए 15 बिलियन अमरीकी डालर के लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया जा सका। हाल के द्विपक्षीय व्यापार के आंकड़े यहां नीचे दिए गए हैं :

(आंकडे मिलियन अमरीकी डालर में)	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16 (अप्रैल - सितंबर)
भारत का निर्यात	3985.02	4731.17	5106.93	5074.29	5,301.99	2012.83
भारत का आयात	7140.55	9973.11	8887.89	6075.26	6,496.52	3310.97
कुल व्यापार	11125.57	14704.29	13994.82	11149.55	11798.51	5323.80

स्रोत : वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार।

दोनों देशों के बीच व्यापार में वृद्धि की पर्याप्त संभावनाएं हैं। भारत की ओर से दक्षिण अफ्रीका को जिन वस्तुओं का निर्यात किया जाता है उनमें मुख्य रूप से वाहन एवं उनके संघटक, परिवहन उपकरण, औषधियां एवं भेषज पदार्थ, इंजीनियरिंग गुड्स, फुटवियर, डाई एवं इंटरमीडिएट्स, रसायन, टेक्सटाइल, चावल, रत्न एवं जवाहरात आदि शामिल हैं।

भारत की ओर से दक्षिण अफ्रीका से जिन वस्तुओं का आयात किया जाता है उनमें मुख्य रूप से सोना, स्टीम कोयला, कॉपर उपस्कर एवं कंसन्ट्रेट्स, फास्फोरिक एसिड, मैगजीन अयस्क, एल्युमिनियम इंगॉट्स एवं अन्य खनिज शामिल हैं। दक्षिण अफ्रीका में निवेश करने वाले प्रमुख भारतीय निवेशकों में टाटा (आटोमोबाइल, आई टी, आतिथि सत्कार एवं फेरोक्रोम प्लांट), यूबी ग्रुप (ब्रेवरीज, अतिथि सत्कार), महिंद्रा (आटोमोबाइल) तथा रैनबैक्सी एवं सिपला सहित अनेक फार्मास्यूटिकल कंपनियां तथा आई टी कंपनियां शामिल हैं तथा खनन क्षेत्र में भी कुछ निवेश किए गए हैं। एस ए बी मिलर (ब्रेवरीज), स सी एस ए (मुंबई एयर पोर्ट का उन्नयन), सैनलाम एवं ओल्ड म्युचुअल (बीमा), अलटेक (सेट टॉप बॉक्स), ऐडकॉक इंग्राम (फार्मास्यूटिकल), रैंड मर्चेंट बैंक (बैंकिंग) के नेतृत्व में भारत में दक्षिण अफ्रीका निवेश में भी वृद्धि हो रही है। फर्स्ट नेशनल बैंक, जो दक्षिण अफ्रीका का एक अग्रणी बैंक है, ने अप्रैल, 2012 में मुंबई में अपनी शाखाएं खोली हैं। लगभग 1.2 लाख भारतीय पर्यटकों ने दक्षिण अफ्रीका का दौरा किया, जबकि दक्षिण अफ्रीका के लगभग 60,000 पर्यटकों ने भारत का दौरा किया।

माइनिंग इंडाबा (जो अफ्रीका का सबसे बड़ा खनन कार्यक्रम है) में भाग लेने के लिए खान सचिव की अध्यक्षता में 25 सदस्यीय शिष्टमंडल ने फरवरी, 2013 में केपटाउन का दौरा किया। परिधान निर्यात संवर्धन परिषद के अध्यक्ष के नेतृत्व में एक 42 सदस्यीय शिष्टमंडल ने भारतीय कपड़ा एवं टेक्सटाइल व्यापार शो में भाग लेने के लिए मार्च, 2013 में केपटाउन का दौरा किया। पूर्व वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री श्री आनंद शर्मा ने तीसरी भारत - दक्षिण अफ्रीका व्यापार मंत्री बैठक में भाग लेने के लिए दक्षिण अफ्रीका का दौरा किया। माइनिंग इंडाबा में शिरकत करने के लिए इस्पात एवं खान मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर के नेतृत्व में एक 24 सदस्यीय शिष्टमंडल ने फरवरी 2015 में केपटाउन का दौरा किया। मध्य प्रदेश सरकार में खनिज संसाधन, ऊर्जा एवं सार्वजनिक कार्य मंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल भी शिष्टमंडल में शामिल थे।

सांस्कृतिक संबंध :

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आई सी सी आर) की मदद से पूरे दक्षिण अफ्रीका में गहन सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है जिसमें दक्षिण अफ्रीका के नागरिकों के लिए प्रायोजकता शामिल है। ऐसे सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अलावा, सार्वजनिक – निजी साझेदारी के रूप में आयोजित 'शेयर्ड हिस्ट्रीज' महोत्सव भी आयोजित किया जाता है जिसने 2015 में अपने 9वें संस्करण का आयोजन किया। दक्षिण अफ्रीका के कला एवं संस्कृति मंत्री श्री पालो जोर्डन ने दिसंबर, 2007 में भारत का दौरा किया जिसके दौरान उन्होंने दक्षिण अफ्रीका की एक बड़ी कला प्रदर्शनी का उद्घाटन भी किया। तत्कालीन पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री श्रीमती अंबिका सोनी ने अगस्त, 2008 में दक्षिण अफ्रीका का दौरा किया तथा कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में सहयोग कार्यक्रम (पी ओ सी) पर हस्ताक्षर किया। जून – अगस्त 2011 के दौरान प्रिटोरिया में भारतीय उच्चायोग तथा दक्षिण अफ्रीका के कला एवं संस्कृति विभाग द्वारा संयुक्त रूप से दक्षिण अफ्रीका में भारत महोत्सव का आयोजन किया गया तथा सहयोग कार्यक्रम के तहत फरवरी – अप्रैल, 2013 के दौरान भारत में दक्षिण अफ्रीका महोत्सव का आयोजन किया गया। सितंबर, 2012 में जोहांसबर्ग में 9वां विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित किया गया। हमारे राजनयिक संबंधों की स्थापना की 20वीं वर्षगांठ तथा दक्षिण अफ्रीका से गांधी जी की भारत वापसी की 100वीं वर्षगांठ के अवसर पर जुलाई – अगस्त, 2014 के दौरान प्रिटोरिया में भारतीय उच्चायोग तथा दक्षिण अफ्रीका के कला एवं संस्कृति विभाग द्वारा संयुक्त रूप से दक्षिण अफ्रीका में भारत महोत्सव का आयोजन किया गया।

स्थानीय संगठनों के साथ मिलकर / उनके सहयोग से दक्षिण अफ्रीका के 13 शहरों में मिशन / पोस्ट द्वारा 21 जून 2015 को पहला अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया।

आई टी ई सी / आई सी सी आर

वित्त वर्ष 2014-15 में आई टी ई सी के अंतर्गत दक्षिण अफ्रीका को 100 स्लॉट प्रदान किए गए थे, जिनमें से 80 स्लॉटों का उपयोग किया गया। वर्ष 2015-16 के लिए कुल 80 आई टी

ई सी स्लॉट आबंटित किए गए हैं, जिनमें से अब तक 48 स्लॉटों का उपयोग कर लिया गया है।

आई सी सी आर ने 2014-15 में दक्षिण अफ्रीका को कुल 52 स्लॉटों की पेशकश की तथा जिसमें से 37 स्लाटों का उपयोग किया गया। वर्ष 2015-16 के लिए आई सी सी आर द्वारा दक्षिण अफ्रीका के लिए कुल 52 स्लाटों की पेशकश की गई है, जिनमें से अब तक 59 स्लॉटों का उपयोग कर लिया गया है।

भारतीय समुदाय

भारतीय मूल के अधिकतर व्यक्ति दक्षिण अफ्रीका 1860 तथा इसके बाद खेतिहर मजदूर के रूप में खेतों में काम करने के लिए तथा नटाल (जो उस समय ब्रिटेन का उप निवेश था) के गन्ना के खेतों में तथा अन्य कृषि फसलों के लिए मिल मजदूर के रूप में काम करने के लिए गए। इन शुरूआती प्रवासियों में अधिकतर (तमिलनाडु एवं आंध्र प्रदेश से थे तथा इनमें से कुछ पूर्वी उत्तर प्रदेश एवं बिहार के भी थे। भारतीय समुदाय की दूसरी खेप 1880 के बाद आई। ये कथितरूप में "यात्री भारतीय'' थे क्योंकि दक्षिण अफ्रीका जाने वाली एक स्टीम शिप पर सवार होने के बदले में उन्होंने अपना – अपना भाड़ा दिया था। यह व्यापारियों का समुदाय था जो मुख्य रूप से गुजरात के थे।

दक्षिण अफ्रीकी – भारतीय मूल के समुदाय की संख्या 1.5 मिलियन के आसपास है तथा दक्षिण अफ्रीका की कुल आबादी में उनका अनुपात लगभग 3 प्रतिशत है। लगभग 80 प्रतिशत भारतीय समुदाय क्वाजुलु नटाल प्रांत में रहता है, लगभग 15 प्रतिशत लोग ग्वेटेंग (पहले इसका नाम ट्रांसवाल था) क्षेत्र में रहते हैं तथा शेष 5 प्रतिशत लोग केपटाउन में रहते हैं। भारतीय मूल के दक्षिण अफ्रीकी लोगों का सरकार, व्यवसाय, मीडिया, विधि तथा अन्य पेशों में अच्छा प्रतिनिधित्व है। वर्ष 2010 दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के पहली बार पहुंचने की 150 वीं वर्षगांठ थी। वर्ष 2014 दक्षिण अफ्रीका से भारत के लिए गांधी जी के अंतिम प्रस्थान का 100वां वर्ष था। वह 9 जनवरी, 1915 को भारत पहुंचे थे। इस तिथि को अब हर साल प्रवासी भारतीय दिवस के रूप में मनाया जाता है।

उपयोगी संसाधन **:**

भारतीय उच्चायुक्त, प्रिटोरिया की वेबसाइट :
http://indiainsouthafrica.com/
भारतीय उच्चायोग,प्रिटोरिया का फेसबुक :
www.facebook.com/indiainsouthafrica
भारतीय उच्चायोग, प्रिटोरिया ट्विटर :
https://twitter.com/hci_pretoria

****

जनवरी**, 2016**